



शिक्षा के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव: सम्भावनाएं एवं चुनौतियाँ

डॉ. राजेन्द्र कुमार जायसवाल

एसो0 प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री गणेश राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोभी, जौनपुर.

Email: jaiswalrajendra27@gmail.com

Received: 08 March 2026 | Accepted: 20 March 2026 | Published: 30 March 2026

सारांश

अत्याधुनिक तकनीकों के वर्तमान युग में, “कृत्रिम बुद्धिमत्ता” प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में मानव की दिशा और दशा बदलने वाली एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जिसमें निरंतर नए आयाम जोड़े जा रहे हैं। कम्प्यूटरीकृत मशीनों और सॉफ्टवेयर प्रौद्योगिकी के अध्ययन एवं विकास को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) की संज्ञा दी गई है। यह एक ऐसी तकनीक है जो पूर्णतः मानवीय विचार शैली, सीखने-सिखाने की तार्किक क्षमता, कठिनतम परिस्थितियों में निर्णय लेना, पूर्वानुमान करना तथा विभिन्न विषयों के ज्ञान से प्रासंगिक उत्तरों की पहचान करना आदि अनेक संभावनाओं को समाहित करती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आज प्रत्येक आयु वर्ग में—चाहे वह 7 वर्ष का बालक हो, 17 वर्ष का किशोर, 27 वर्ष का युवा, 37 वर्ष का प्रौढ़, 47 वर्ष का अर्धेड अथवा 70 वर्ष का वृद्ध—अत्यधिक लोकप्रिय होने के साथ-साथ एक अनिवार्य आवश्यकता बनती जा रही है। शिक्षा सहित विभिन्न क्षेत्रों में कौशल-आधारित पाठ्यक्रम, शिक्षण-प्रतिमानों का दृश्यात्मक स्वरूप तथा शैक्षिक अनुप्रयोग विकसित किए जा रहे हैं। स्मार्ट उपकरणों और वेब-आधारित विविध विषय-वस्तु की बढ़ती उपलब्धता के कारण शिक्षा का स्वरूप निरंतर परिवर्तित हो रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षा के क्षेत्र में एक नए युग की शुरुआत कर रही है, जिससे शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया अधिक व्यक्तिगत, प्रभावी और आकर्षक हो गई है।

हालांकि, तेजी से विकसित होती यह तकनीक निश्चित रूप से अनेक चुनौतियाँ और भविष्यगत खतरे भी साथ लाती है, जैसे—सोशल नेटवर्किंग साइड्र के अनियमित प्रयोग से उत्पन्न मानसिक तनाव, स्मार्टफोन के स्क्रीन समय का नियंत्रण न होना, तथा बालकों द्वारा शारीरिक गतिविधियों में कम भागीदारी आदि। प्रस्तुत शोध-पत्र वस्तुतः कृत्रिम बुद्धिमत्ता का शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करने के साथ-साथ भविष्यपरक संभावनाओं और इससे उत्पन्न जोखिमों का भी अवलोकन करेगा।

मूल शब्द— शैक्षिक तकनीकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता.

प्रस्तावना

21वीं सदी में तकनीकी विकास ने शिक्षा जगत को एक नयी दिशा प्रदान की है। विशेष रूप से कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) ने शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की पारम्परिक विधियों को बदलकर नवाचारपूर्ण रूप में प्रस्तुत किया है। वर्तमान समय में शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों को ऐसी तकनीकों से अवगत होना आवश्यक हो गया है जो न केवल शिक्षण को प्रभावशाली बनाएं बल्कि सीखने की प्रक्रिया को अधिक सुलभ, रोचक और व्यक्तिगत भी बनाए। शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के उदय से शिक्षकों की शिक्षण-शैली ही नहीं अपितु छात्रों के अधिगम में भी व्यावहारिक क्रांति हुयी है।

अपनी परियोजनाओं के माध्यम से यूनेस्को ने पुष्टि की है कि शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की सहभागिता का उद्देश्य मानव क्षमताओं को बढ़ाने और जीवन, सीखने और काम में प्रभावी मानव-मशीन सहयोग और सतत् विकास के मानव अधिकारों की रक्षा करना है। यदि आप शिक्षा के क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) जैसी उभरती तकनीकों का लाभ उठाने में रुचि रखते हैं, तो हम वित्तीय या तकनीकी सलाह योगदान के माध्यम से आपके साथ साझेदारी करने के लिए तत्पर हैं। “हमें इस प्रतिबद्धता को नवीनीकृत करने की आवश्यकता है क्योंकि हम एक ऐसे युग की ओर बढ़ रहे हैं जिसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) - उभरती प्रौद्योगिकियों का एक अभिसरण हमारे दैनिक जीवन के प्रत्येक पहलू को बदल रहा है- सुश्री स्टेफेनिया जियानिनी (शिक्षा के लिए यूनेस्को की सहायक महानिदेशक)”।

हाल के वर्षों में, विशेषज्ञों ने भविष्यवाणी की है, कि वर्ष 2027 तक भारत की शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के उपयोग में 35.5% की वृद्धि होगी। वहीं कुछ शिक्षाविदों ने विचार व्यक्त किया है कि यदि शिक्षक स्वयं को वर्तमान शैक्षिक तकनीकियों से परिपूर्ण नहीं करते हैं तो इस तकनीकी के बढ़ते प्रयोग से शिक्षा-पेशेवरों की भूमिका पर खतरा हो सकता है।

भारत विश्व की सबसे बड़ी शिक्षा प्रणालियों में से एक है, जहाँ लगभग 30 करोड़ से अधिक विद्यार्थी और 95 लाख से अधिक शिक्षक कार्यरत हैं। इतनी विशाल प्रणाली में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, समान अवसर और व्यक्तिगत ध्यान प्रदान करना हमेशा से चुनौतीपूर्ण रहा है। ऐसे में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में उभर कर आया है, जो शिक्षण-सीखने की प्रक्रिया को पुनर्परिभाषित कर सकता है। कोविड-19 महामारी ने भी शिक्षा के डिजिटलीकरण और AI- संचालित अधिगम उपकरणों के उपयोग को अभूतपूर्व रूप से बढ़ावा दिया। आनलाइन शिक्षण, आभासी कक्षाएं, AI आधारित मूल्यांकन, भाषायी अनुवाद और अधिगम विश्लेषण के विभिन्न उपकरण भारतीय शिक्षा का अनिवार्य हिस्सा बन गये हैं।

हालांकि AI के बढ़ते उपयोग के साथ नयी चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं, जैसे- डाटा गोपनीयता, नैतिकता, डिजिटल विभाजन और शिक्षकों की तकनीकी क्षमता का अभाव। इन जटिलताओं को समझना आवश्यक है ताकि AI के लाभों को अधिकतम किया जा सके और संभावित चुनौतियों को न्यूनतम।

शैक्षिक तकनीकी

तकनीक ने शिक्षा की पारम्परिक परिभाषा को बदलकर उसे अधिक समावेशी और नवीन बना दिया है। शैक्षिक प्रायोगिकी का अर्थ है शिक्षण-अधिगम को बेहतर, सुलभ और प्रभावी बनाने के लिए कम्प्यूटर, साफ्टवेयर, इण्टरनेट और आधुनिक स्मार्ट उपकरणों का उपयोग करना। दिन-प्रतिदिन विकसित होती तकनीकें शिक्षा को बेहतर बनाने का एक शक्तिशाली साधन हैं। इसका सही उपयोग रचनात्मकता और ज्ञान को बढ़ा सकता है, बशर्ते तकनीकों का प्रयोग करते हुए समय प्रबंधन का ध्यान रखें ताकि शारीरिक स्वास्थ्य और व्यक्तिगत विकास पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े। वर्तमान समय में भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व की शिक्षा-प्रणाली में सूचना तकनीकियों के हस्तक्षेप ने शिक्षक की शिक्षण शैली तथा शिक्षार्थी की अधिगम क्षमता दोनों को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। इससे शिक्षा अधिक व्यवहारिक परिणाम ला रही है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence – AI)

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) ऐसे कम्प्यूटेशनल तरीकों का समुच्चय है, जिनके माध्यम से मशीनें सीखने, तर्क करने, निर्णय लेने और समस्या-समाधान जैसी प्रक्रियाओं को मानवीय दक्षता के पास ले जा सकती है। शिक्षा के संदर्भ में AI का प्रयोग शिक्षक-शिक्षार्थी संवाद को बेहतर बनाने, सीखने की गति व आवश्यकताओं के अनुरूप सामग्री प्रदान करने, और मूल्यांकन प्रणालियों को अधिक सटिक व पारदर्शी बनाने के लिए किया जा रहा है। EdTech प्लेटफॉर्म पर केंद्रीय भूमिका निभाते जा रहे हैं। ये प्लेटफॉर्म छात्रों और शिक्षकों दोनों की सहायता के लिए शिक्षा में AI उपकरणों का उपयोग करते हैं।

भारत में AI की यात्रा धीरे-धीरे विकसित होने वाली प्रक्रिया रही है। शुरुआती वर्षों में यह मुख्य रूप से प्रायोगिक शोध और कम्प्यूटिंग क्षमताओं के विकास तक सीमित था, परन्तु 21 वीं सदी के दूसरे दशक में सूचना प्रौद्योगिकी के विस्तार तथा इण्टरनेट सेवाओं की व्यापक उपलब्धता ने इसके उपयोग की दिशा बदली। वर्ष 2014 के बाद तकनीकी अवसंरचना के तीव्र विकास और सरकारी डिजिटल नीतियों ने AI को शैक्षणिक योजनाओं का मुख्य घटक बना दिया। इसी अवधि में अनेक भारतीय EdTech कम्पनियों ने AI आधारित पाठ्य-सामग्री, परीक्षण, ट्रेकिंग और विश्लेषण उपकरण विकसित किए, जिनसे शिक्षा में तकनीकी हस्तक्षेप की गति और बढ़ी।

शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence – AI)

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) अब केवल एक भविष्यवादी अवधारणा नहीं रह गई है। यह हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन गई है। घरों में स्मार्ट असिस्टेंट से लेकर सुपरमार्केट में सेल्फ-चेकआउट सिस्टम तक, AI प्रत्येक स्थान पर उपलब्ध है। भारत में शिक्षा के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता AI के द्वारा छात्रों के सीखने के तरीके, शिक्षकों के पढ़ाने के तरीके और संचालन को आकार दे रहा है। AI छात्रों के प्रदर्शन का विश्लेषण कर सकता है, पाठों को वैयक्तिकृत कर सकता है, क्विज बना सकता है, प्रतिक्रिया उत्पन्न कर सकता है और पाठ्य-सामग्री के कठिनाई स्तर को समायोजित कर सकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सम्भावनाएं

शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) हमारे शिक्षण और अधिगम व्यवहार को बदल रहा है। स्मार्ट क्लासरूम से छात्रों की सहभागिता बढ़ रही है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षा में डेटा-आधारित, अनुकूलित और कुशल दृष्टिकोण लाती है। शिक्षा के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट होती है-

- **स्मार्ट कंटेंट निर्माण** : कृत्रिम बुद्धिमत्ता कुछ ही मिनटों में क्विज, फ्लैशकार्ड और अध्ययन सामग्री तैयार कर सकती है। इससे शिक्षकों का समय बचता है और छात्रों को अतिरिक्त संसाधन उपलब्ध होते हैं।
- **व्यक्तिगत शिक्षण मार्ग** : AI छात्रों के व्यवहार, सीखने की गति और प्रदर्शन पर नजर रखता है फिर उनकी आवश्यकता के अनुसार अध्ययन योजनाएं तैयार करता है। इससे सीखना अधिक प्रभावी और आनंददायक हो जाता है।

- **प्रशासनिक कार्यों का स्वचालन** : कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) प्रायोगिक कार्यों की ग्रेडिंग, उपस्थिति दर्ज करने और समय-सारणी बनाने जैसे नियमित कार्यों को स्वचालित कर सकती है। इससे शिक्षकों को शिक्षण पर अधिक ध्यान केंद्रित करने में सहायता मिलती है।
- **स्मार्ट टीचिंग टूल्स द्वारा छात्रों को जानकारी उपलब्ध कराना** : AI आधारित ऐप्स और प्लेटफॉर्म जैसे- वर्चुअल टीचर, चैटबॉट्स और स्मार्ट क्लासरूम छात्रों की समस्याओं का तुरन्त समाधान करते हैं। और और शिक्षकों की जिम्मेदारियों को आसान बनाकर कार्य दबाव को कम करते हैं।
- **24x7 सीखने की सुविधा उपलब्ध** : AI आधारित लर्निंग प्लेटफॉर्म कभी भी और कहीं भी अध्ययन की सुविधा देते हैं। छात्र अपनी रुचि, सुविधा और अध्ययन क्षेत्र के अनुसार दृश्य-श्रव्य सामग्री, विज और प्रश्नोत्तरी का अभ्यास कर सकते हैं।
- **रोजगार क्षमता का निर्माण** : AICTE का NEAT प्लेटफॉर्म छात्रों को उभरते क्षेत्रों, जैसे- इलेक्ट्रिक वाहन और सेमी कण्डक्टर में इंटरशिप से जोड़ता है। मुख्य रूप से शिक्षा के क्षेत्र में AI न केवल सीखने की गुणवत्ता बढ़ा रहा है, बल्कि शिक्षा को सभी के लिए सुलभ और आधुनिक बना रहा है। भविष्य में AI शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ बनेगा।

विकसित देशों की तरह भारत देश भी शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) डिजिटल शिक्षा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रति जागरूकता को प्रोत्साहित करती है। नीति आयोग ने 'सभी के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता' कार्यक्रम भी शुरू किए हैं। भविष्य में उच्च शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण और अनुसंधान में AI का अधिक गहन एकीकरण होगा।

यूनेस्को ने शिक्षा में AI के लिए कुछ मूल सिद्धांत रेखांकित किए हैं जिसमें मानव-केन्द्रित दृष्टिकोण, समानता व समावेशन, नैतिक उपयोग, डेटा की गोपनीयता एवं सांस्कृतिक संवेदनशीलता शामिल है। ये सिद्धांत इसलिए आवश्यक हैं क्योंकि AI से जुड़ी चुनौतियाँ भी कम नहीं हैं। डिजिटल विभाजन, AI पर अधिक निर्भरता, एल्गोरिदमिक पूर्वाग्रह, शिक्षकों की अपर्याप्त तैयारी और छात्रों के डेटा की निजता से जुड़े खतरे गम्भीर चिंताएं हैं। उदाहरणस्वरूप, कई एडटेक कम्पनियों द्वारा छात्र डेटा के व्यावसायिक उपयोग को लेकर सवाल उठ रहे हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की चुनौतियाँ

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) भारत की शिक्षा प्रणाली को छात्र-केन्द्रित बनाने की अभूतपूर्व क्षमता रखती है। यदि नैतिकता, समावेशन और मानवीय निगरानी के साथ अपनाया जाए, तो AI न केवल गुणवत्ता में सुधार करेगा बल्कि समान अवसर व नवाचार का मार्ग भी प्रशस्त करेगा। एक भविष्य के लिए तैयार, ज्ञान-आधारित विकसित भारत के निर्माण में शिक्षा में AI की भूमिका निर्णायक होगी। शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के एकीकरण में अनेक चुनौतियाँ हैं, जिनमें डेटा गोपनीयता, एल्गोरिदम पूर्वाग्रह और अत्यधिक निर्भरता के कारण आलोचनात्मक सोच कौशल में कमी की संभावना शामिल है। शिक्षा के क्षेत्र में अपार सम्भावनाएं रखने वाली कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की राह में निम्नलिखित प्रमुख चुनौतियाँ हैं-

- **शैक्षणिक नैतिकता और साहित्यिक चोरी का खतरा** : छात्रों द्वारा AI का उपयोग साहित्यिक चोरी के लिए कर सकते हैं, जिससे स्वतंत्र विचार, समस्या-समाधान और आलोचनात्मक वाक् कौशल के विकास का मार्ग अवरुद्ध हो सकता है। इसके अतिरिक्त डीपफेक, आयु-अनुचित सामग्री और मानवीय शिक्षकों की तुलना में सहानुभूति/मानवीय आत्मीयता की कमी का जोखिम बना रहता है।
- **पूर्वाग्रह और असमानता** : AI एल्गोरिदम में प्रशिक्षण आँकड़ों के आधार पर पूर्वाग्रह हो सकते हैं, जिससे अनुचित आँकलन अथवा प्रस्तुत जानकारियाँ विकृत हो सकती हैं। विद्युत, आधुनिक कम्प्यूटर व इण्टरनेट जैसी मूलभूत संसाधनों की अल्पता से डिजिटल विभाजन की सम्भावना अधिक हो जाती है जिससे शैक्षिक असमानता बढ़ती है।
- **क्रियान्वयन की उच्च वित्तीय लागत** : उन्नत AI आधारित प्रणालियों का क्रियान्वयन हेतु बुनियादी प्रारूप और प्रौद्योगिकी में महत्वपूर्ण वित्तीय निवेश की आवश्यकता होती है जो देश के सभी संस्थानों के लिए सम्भव नहीं हो सकता है।
- **शिक्षक-प्रशिक्षण कौशल में कमी** : शिक्षकों के पास अक्सर पाठ्यक्रम में AI उपकरणों को प्रभावी रूप से एकीकृत करने के लिए आवश्यक प्रशिक्षण की कमी होती है जहाँ AI पर निर्भरता से मानवीय शिक्षण क्षमता कम हो जाती है।
- **तकनीकी और गुणवत्ता सम्बन्धी परिसीमाएं** : AI उपकरणों द्वारा प्रस्तुत जानकारियों की प्रामाणिकता भी एक विचारात्मक विषय है। तथ्यों की संदेहास्पद स्थिति से गहन सन्दर्भ को समझने में कठिनाई उत्पन्न हो सकती है।
- **प्रौद्योगिकी पर अत्यधिक निर्भरता** : हालांकि AI सीखने में सहायक हो सकता है, लेकिन यह शिक्षण में मानवीय स्पर्श का स्थान नहीं ले सकता। AI पर अत्यधिक निर्भरता से आलोचनात्मक सोच, सहयोग और सामाजिक अधिगम के अवसर कम हो सकते हैं।

निष्कर्ष

शिक्षा में **AI** का भविष्य शिक्षकों को प्रतिस्थापित करने के बारे में नहीं है, अपितु उन्हें सशक्त बनाने, विद्यार्थियों के सीखने के अनुभवों को बेहतर बनाने और शिक्षा को सभी के लिए सुलभ और प्रभावी बनाने के बारे में है। विद्यार्थियों और पेशेवरों के लिए **AI** कौशल सीखने और आने वाले परिवर्तनों के लिए तैयार होने का यह सही समय है। जैसे **AI** तकनीकें परिपक्व होती जाएंगी, उन्हें समझने और उनके साथ काम करने में सक्षम लोग शिक्षा की अगली पीढ़ी को आकार देने में अग्रणी भूमिका निभाएंगे।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (**AI**) किसी भी समय और कहीं भी शिक्षकों और अध्ययन सामग्री को **24 x 7** उपलब्ध कराता है। **AI** को एक शैक्षिक उपकरण के रूप में प्रयोग किया जा सकता है जो छात्रों को **AI** एल्गोरिदम के आधार पर होम वर्क, क्विज इत्यादि पर व्यक्तिगत प्रतिक्रिया प्रदान करके उनके लक्ष्यों की ओर मार्गदर्शन करता है। शिक्षा में **AI** का प्रयोग भविष्य में और अधिक व्यापक होगा। हाइब्रिड शिक्षण मॉडल, एडाप्टिव लर्निंग और **AI** आधारित नीति निर्माण जैसे क्षेत्र उभरते जा रहे हैं। यदि को सही दिशा, नियमन, और नैतिक सीमाओं के अन्तर्गत विकसित किया जाए तो यह शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकता है। **AI** द्वारा विश्व के लगभग प्रत्येक स्थान पर डेटा वितरण और साझा करने में आसानी हुई है।

अन्ततः कहा जा सकता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (**AI**) एक दोधारी तलवार के समान है। जहाँ एक ओर यह शिक्षा को अधिक समावेशी, अनुकूलित और प्रभावी बना सकता है, वहीं दूसरी ओर यह विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का नया आयाम भी प्रस्तुत करता है। आवश्यकता है संतुलित दृष्टिकोण, सक्षम नीतियों और मानवीय मूल्यों के साथ तकनीक समावेशन की। तभी हम **AI** आधारित शिक्षा को सर्वहितकारी शिक्षा में बदल सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

- [1]. NEP 2020 भाग तृतीय, “ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा : प्रौद्योगिकी का समान उपयोग सुनिश्चित करना।”
- [2]. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) - भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय।
- [3]. UNESCO (2021) – AI and Education : Guidance for policy-makers.
- [4]. NITI Aayog (2018) – National Strategy for Artificial Intelligence- Government of India.
- [5]. Holmes, W., Bialik, M., & Fadel, C. (2019).- Artificial Intelligence in Education : Promises and Implications for Teaching and Learning. Center for Curriculum Redesign.
- [6]. Mishra, S., (2020) – Role of Artificial Intelligence in Education System. (IJCRT), Volume 8, Issue 7.
- [7]. Dhavala Soma, – Artificial Intelligence for Education. It is cited by (UNESCO, 2018)
- [8]. वर्मा, रेखा (2021) - “ शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग : एक समीक्षा,” शिक्षा विमर्श, खंड 14 अंक 2 पृष्ठ 30-36.
- [9]. भारत सरकार, नीति आयोग (2021) – AI for All : Making Artificial Intelligence work for India.
- [10]. Kumar V.(2023) – Future Trends in AI for Indian Education, AI & Future Learning, Vol. 6. No. 3, pp. 280 – 295.

Cite this Article:

जायसवाल, राजेन्द्र कुमार (2026). शिक्षा के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव: सम्भावनाएं एवं चुनौतियाँ. *International Journal of Emerging Voices in Education*, 2(3), 34–37.

Journal URL: <https://ijeve.com/> DOI: <https://doi.org/10.59828/ijeve.v2i3.44>